जीवन में जब कुछ बड़ा मिल जाए तो कभी अपने से छोटे को मत भूलना।
– अज्ञात

घूमने को लेकर स्वतंत्र नजरिया

ट्रैवलिंग साइट '101 हॉलिडेज' ने अपने एक सर्वेक्षण के आधार पर कहा है कि छुट्टियों में घूमने जाने वाले अकेले लोगों की संख्या में अभी 10 प्रतिशत की सालाना बढ़ोतरी हो रही है और ऐसे पर्यटकों की कुल तादाद में 68 फीसदी महिलाएं हैं।

नवीन जोशी।

लंबे सफर पर अकेले निकलने वालों में पुरुषों से कहीं बड़ी तादाद आज महिलाओं की है। सामाजिक–आर्थिक और भौगोलिक बाधाएं वैश्विक स्तर पर उनके लिए बेमतलब हो चुकी हैं। किसी के साथ रहकर नहीं, अपनी आंखों से, अपने तरीके से संसार को देखना उनके अजेंडे पर है। ट्रैवलिंग साइट '101 हॉलिडेज' ने अपने एक सर्वेक्षण के आधार पर कहा है कि छुट्टियों में घूमने जाने वाले अकेले लोगों की संख्या में अभी 10 प्रतिशत की सालाना बढ़ोतरी हो रही है और ऐसे पर्यटकों की कुल तादाद में 68 फीसदी महिलाएं हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो छुट्टियों का आनंद अब औरतें अकेले लेना चाहती हैं। पहले यह काम वे परिवार या दोस्तों के साथ करती थीं, पर अब वे इसके साथ जुड़े दबावों से मुक्त हो रही हैं। जिस तरह जीवन के बाकी फैसले वे खुद करना चाहती हैं, उसी तरह घूमने को लेकर स्वतंत्र नजरिया भी रखती हैं।

परिवार के साथ घूमते हुए अक्सर महिलाओं का ध्यान बच्चे संभालने में लगा रहता है। फिर कहां घूमना है, यह निर्णय भी परिवार के हिसाब से होने लगता है। इसी तरह समूह में घूमने पर कई बार व्यक्तिगत इच्छाओं को मारना पड़ता है और सामूहिक निर्णय को स्वीकार करना पड़ता है, जबकि अकेले में यह स्वतंत्रता रहती है कि व्यक्ति अपनी मर्जी से किसी स्थान को देर तक या बार–बार देखे, अपने हिसाब से अपना रहना–खाना तय करे। सामाजिक–आर्थिक विकास की प्रक्रिया ने स्त्रियों में स्वतंत्र रूप से जीने की जो प्रबल इच्छा पैदा की है, उसका प्रभाव भारतीय महिलाओं पर भी देखने को मिल रहा है।

'ब्रिटिश एयरवेज' ने 2018 की एक सर्वे रिपोर्ट में कहा था कि भारतीय महिलाओं में 47 प्रतिशत अकेले यात्रा करती हैं। गुड़गांव स्थित हॉस्टल कंपनी जॉस्टल के एक सर्वे के अनुसार 2015 से 2018 के बीच देश में महिला पर्यटकों की संख्या में 399 फीसदी की वृद्धि हुई है, जिनमें 322 प्रतिशत हिस्सा अकेले घूमने वाली महिलाओं का है। जाहिर है, देश के भीतर भी बहुत सारी महिलाएं अकेले घूम रही हैं। अभी बीसेक साल पहले तक महिलाओं का अकेले कहीं जाना बहुत मजबूरी में ही हो पाता था, पर आज यह आम बात हो चुकी है।

नब्बे के दशक में भूमंडलीकरण और उदारीकरण से भारतीय समाज का मन भी खुलता गया है। लड़कियों का घर से बाहर निकलकर नौकरी और कारोबार करना अच्छा माना जाने लगा, और अब लोग उन्हें पर्यटक के रूप में अकेली देखने के अभ्यस्त हो रहे हैं। पर इस प्रवृत्ति का नीचे तक पहुंचना बाकी है। जॉस्टल के अनुसार बेंगलुरु, दिल्ली, मुंबई, पुणे और चेन्नई की औरतें ही ज्यादातर सिंगल टूरिस्ट के रूप में आती हैं। यह मामला एक स्तर पर स्त्री के सशक्तीकरण से भी जुड़ा है। ज्यों–ज्यों देश के बाकी इलाकों और वर्गों में इनकी ताकत बढ़ेगी, उनमें दुनिया को अपनी नजर से देखने का जज्बा भी बढ़ेगा।

सीखने के लिए परेशानें

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

जो सीखने के लिए परेशान हैं, उन्हें प्रयोग करने चाहिए और अपनी खोज को स्वीकार करना चाहिए। उन्हें बाहरी मतों, सिद्धांतो का पालन नहीं करना चाहिए, चाहे वे कितने ही गहरे क्यों न हों। उन्हें दूसरों के अनुभवों पर यकीन करने की जरूरत नहीं, चाहे वे कितने ही प्रामाणिक क्यों न हों। उन्हें अपने अनुभवों पर यकीन करना चाहिए। किसी को उसके ऐश्वर्य के आधार पर स्वीकार नहीं करना चाहिए चाहे वह बुद्ध हो, वेदों की बातें हों या अनुभव किया गया हो। बुद्ध के लिए आत्म–अनुभव के माध्यम से आत्म–सत्यापन "उच्च ज्ञान, बुद्धि, निर्वाण के लिए मन की शांति" का रास्ता है। निर्वाण जीवन के बाद वाला अनुभव नहीं है। ये यहीं है अभी है।

संपादकीय

वूहान वायरस का किस्सा

बीते साल के आखिरी दिन मध्य चीन के एक करोड़ से ज्यादा आबादी वाले शहर वूहान से उठी एक जानलेवा बीमारी को महामारी का नाम कब दिया जाता है, और इबोला वायरस की तरह इस बीमारी के कारक तत्व को इस शहर का नाम दिया जाता है या नहीं, यह आने वाला वक्त बताएगा। कम लोग जानते हैं कि इबोला एक संक्रामक बीमारी से पहले गरीब अफ्रीकी देश डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो की एक छोटी सी नदी का नाम हुआ करता था।

बीमारी अगर ताकतवर मुल्क से शुरू हो तो उसके साथ वहां का कोई नाम नहीं जुड़ता, जैसा कि 2003 में चीन में ही 800 लोगों की जान लेने वाले सार्स (सीवियर अक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रम) के साथ हुआ था। मात्र 25 दिन में 900 लोगों को चपेट में लेकर 26 की जान ले चुका वूहान का वायरल न्यूमोनिया एक कोरोना वायरस की उपज है। यह विषाणुओं की वह किस्म है, जिसे सूक्ष्मदर्शी से देखने पर इसके गोल पिलपिले शरीर पर उभरी संरचनाएं आभामंडल जैसी दिखती हैं। अभी तक की खोजबीन से पता चला है कि इबोला की तरह वूहान वायरस का स्रोत भी चमगादड़ ही हैं, लेकिन इसे मौजूदा रूप किसी सांप को संक्रमित करने के बाद हासिल हुआ है।

अब, ऐसी कौन सी जगह हो सकती है, जहां काफी सारे चमगादड़ और सांप आसपास रहते हों और वहां बहुतेरे मनुष्यों की आवाजाही भी होती है? यह जगह वूहान की एक एग्जॉटिक फूड मार्केट निकली है, जहां सैकड़ों तरह के जीव अद्भुत व्यंजनों के शौकीन लोगों की सेवा में प्रस्तुत रहते हैं! देखें, इस किस्से का अंजाम क्या होता है।

आईएमएफ के अनुसार, भारत की जीडीपी वृद्धि दर वित्त वर्ष 2020–21 में 5.8 प्रतिशत और 2021–22 में 6.5 प्रतिशत रहेगी। सरकार का कहना है कि भारत की सुस्ती की वजह बाहरी माहौल में है।

विश्व अर्थव्यवस्था की सुस्ती

सतीश सिंह।

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने 20 जनवरी को चालू वित्त वर्ष की अनुमानित जीडीपी विकास दर 6.1 प्रतिशत से घटाकर 4.8 प्रतिशत कर दी है। उसने आने वाले सालों के लिए भी विकास दर अनुमान को कम किया है। आईएमएफ के अनुसार, भारत की जीडीपी वृद्धि दर वित्त वर्ष 2020–21 में 5.8 प्रतिशत और 2021–22 में 6.5 प्रतिशत रहेगी। सरकार का कहना है कि भारत की सुस्ती की वजह बाहरी माहौल में है, लेकिन इसके उलट आईएमएफ का मानना है कि भारत में जीडीपी वृद्धि दर कम होने के चलते विश्व अर्थव्यवस्था की सुस्ती बढ़ रही है। जारी वित्त वर्ष में नॉमिनल जीडीपी (यानी मौजूदा बाजार मूल्यों पर आधारित जीडीपी) दर में भी कमी आने के आसार हैं। इस साल यह 7.5 प्रतिशत रह सकती है, जो बीते 42 सालों में सबसे निचला स्तर होगा। पिछले वित्त वर्ष में नॉमिनल जीडीपी 11.2 प्रतिशत थी।

वित्त वर्ष 2018–19 के मुकाबले 2019–20 में खनन, सार्वजनिक प्रशासन और रक्षा क्षेत्र के अलावा बाकी सभी क्षेत्रों में कम वृद्धि होने के आसार हैं। कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में इस साल 2.8 प्रतिशत की दर से वृद्धि होने की संभावना है, जबकि पिछले साल समान अवधि में इसमें 2.

9 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई थी। कृषि, सहकारिता और किसान कल्याण विभाग द्वारा जारी मौजूदा वित्त वर्ष के लिए सभी खरीफ फसलों का उत्पादन अनुमान 1405.7 लाख टन है, जबकि पिछले वित्त वर्ष में सभी खरीफ फसलों का उत्पादन 1415.9 लाख टन हुआ था। उद्योग में इस साल 2.5 प्रतिशत की दर से वृद्धि हो सकती है, जबकि पिछले साल इस क्षेत्र में 6.9 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई थी। उद्योग में खराब प्रदर्शन का कारण इसके सभी उप–क्षेत्रों का प्रदर्शन खराब होना है।

विनिर्माण क्षेत्र (मैन्युफैक्चरिंग) में इस साल 2.5 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई है, जबकि पिछले साल इस क्षेत्र में 6.9 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई थी। इसी तरह निर्माण क्षेत्र (कॉन्स्ट्रक्शन) में इस साल 3.2 प्रतिशत की दर से वृद्धि होने का अनुमान है, जबकि पिछले साल यह 8.7 प्रतिशत दर्ज की गई थी।

सेवा क्षेत्र में इस साल 6.9 प्रतिशत की दर से वृद्धि होने का अनुमान है, जबकि पिछले साल इस क्षेत्र में 7.5 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई थी। इसके उपखंडों जैसे, वित्त, रीयल एस्टेट और व्यावसायिक सेवाओं की वृद्धि दर 6.4 प्रतिशत रहने का अनुमान है, जबकि पिछले साल इनमें 7.4 प्रतिशत की वृद्धि देखने को मिली थी। इस साल वर्ष दर वर्ष के आधार पर और स्थिर मूल्य के आधार पर अंतिम उपभोग व्यय में 6.5 प्रतिशत की दर से बढ़ोतरी होने का अनुमान है, जबकि बीते साल इसमें 8.3 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई थी। निजी अंतिम उपभोग व्यय में इस साल 5.8 प्रतिशत की दर से वृद्धि होने का अनुमान है, जबकि पिछले साल इसमें 8.1 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई थी। मौजूदा वित्त वर्ष में वर्ष दर वर्ष के आधार पर सरकारी अंतिम उपभोग व्यय में 10.5 प्रतिशत की दर से वृद्धि होने का अनुमान है, जबकि पिछले साल इसमें 9.2 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई थी।

अष्टयोग- 4931

7	6		4		3	5
2	28	4	33	7	35	
	2		6		7	
5	28		38		34	1
	2	6	3		1	
3	31	2	31	1	30	6
6	1		4		5	2

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4930 का हल

1	2	3	7	5	6	4
3	29	6	37	2	31	1
4	3	7	1	6	2	5
5	29	1	33	4	37	6
6	1	2	5	7	4	3
2	33	4	31	3	30	7
7	6	5	4	1	3	2

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

बढ़ रही मुद्रास्फीति

मुकुल श्रीवास्तव। चालू वित्त वर्ष में जीडीपी विकास की दर गिरकर 11 वर्षों के निचले स्तर पर जा पहुंची है। अंदाजा है कि वित्त वर्ष 2019–20 में यह 5 फीसदी रहेगी जबकि 2018–19 में यह 6.8 प्रतिशत थी। इकॉनमी के ये आंकड़े वित्त मंत्री के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उन्हें बजट में इनके सहारे ही चलना होगा। यही वजह है कि पीएम मोदी ने इस बार खुद कमान संभाल रखी है। उन्होंने अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के उपायों को लेकर कॉर्पोरेट्स के अलावा आर्थिक विशेषज्ञों से भी लगातार चर्चा की और उनके सुझाव लिए। सरकारों के पास रेवेन्यू का सबसे बड़ा स्रोत टैक्स होता है। इसके दो सोर्स गवर्नमेंट के पास हैं। पहला है डायरेक्ट टैक्स, जैसे इनकम टैक्स और दूसरा इनडायरेक्ट टैक्स, जिसमें जीएसटी वगैरह आते हैं। बजट का दारोमदार इनकी कुल वसूली पर ही टिका होता है। विभिन्न मदों में धन सरकार को इसी प्राप्ति से देना होता है, और टैक्स में छूट भी।